Dr Tapati Mukerjee.
Associate Professor
Date.–
HOD in Music
Rohtas Mahila College
Sasaram.

Study Material For B.A Part II (Hon)
Subject · Music ·
Topic – Short note: उद्ग्राह, ध्रुव, ~~मेलापक~~ मेलापक, नायक-गायक, कलावंत, वाग्गेयकार

(a) उद्ग्राह – प्राचीन प्रबन्धों के विश्लेषण यह देखते पाते हैं कि उद्ग्राह और ध्रुव किसी सांगीतिक रचना के लिए अनिवार्य अंग माना जाता था। ध्रुव आधुनिक समय के स्थायी के अनुरूप वर्तमान समय में जब हमलोग गायन का प्रारम्भ करते हैं तो पहले स्थायी गाते हैं उसी प्रकार ध्रुव के पहले उद्ग्राह गाया जाता था। समय के साथ साथ वर्तमान में यह उद्ग्राह समाप्त हो गया है।

(B) ध्रुव :– प्रबन्ध गायन में इस धातु की अनिवार्यता थी। अत: इसका नाम ध्रुव अर्थात् अचल रहने वाली धातु है।

(C) मेलापक · कभी-कभी उद्ग्राह और ध्रुव के मध्य भाग में "अन्तर नामक एक धातु और एक धातु होती थी इस प्रकार प्रबन्ध का प्रारंभिक भाग उद्ग्राह था। उद्ग्राह को तृतीय अंग ध्रुव से मिलाने वाला होने के कारण इस द्वितीय अंग का मेलापक रहा।

Scanned with CamScanner

(D) नायक – गायक

जो संगीतकों प्राचीन तथा नवीन दोनों प्रकार के संगीत का पूर्ण ज्ञाता तथा गुरु-परम्परा से मिलते मुलते शिक्षा के अनुकूल ताल और स्वर से बंधी हुई चीजों शुद्ध रूप से गाता तथा वादन तथा उनके द्वारा प्रदर्शित की हुई कला को नाद को कहते है उन्हे नायक कहते है तथा ।

गायक – जो गुरु-परम्परा से बंधी हुई चीजों को या नायक द्वारा प्रदर्शित संगीत में अपनी बुद्धि से विस्तार तथा अलंकार व तानो का प्रयोग करते हुए उसके सौन्दर्य तथा विचित्रता कायम करते है उनको गायक कहा जाता है, और उनके माध्यम से जो कला प्रकाशित होते है उन्हें गायकी कहते है ।

(E) कलावंत – कलावंत का मुख्य गुण है क्रियासिद्धि कलावन्त उन गायकों को कहा जाता था जो ध्रुपद शैली के गायक होते थे, उन्हें स्वर, लय, ताल पद आदि पर पूर्ण रूप से ज्ञान तथा अभ्यास रहता था, संगीत कला की सम्पूर्ण बारीकियों की ज्ञान उनमे रहती थी, तथा कुशलता पूर्वक

(F) वाग्गेयकार

वैसे व्यक्ति जिनको साहित्य और संगीत का सम्पूर्ण ज्ञान हो उन्हें वाग्गेयकार कहा जाता था। वाक + गेय + कार = वाग्गेयकार । वाक का अर्थ है पद्य रचना और गेय का अर्थ स्वर रचना ।

प्राचीन काल में मातु तथा धातु शब्द का प्रयोग साहित्य और संगीत के लिए किया जाता था,

जो कलाकार मातु अर्थात वाक और धातु अर्थात गान में प्रवीण होता था उसे वाग्गेयकार कहा गया है। पंडित शारंगदेव ने अपनी ग्रंथ "संगीत रत्नाकर" में वाग्गेयकार का निरूपण निम्न श्लोक के माध्यम से किये हैं—

"वाग्मातु रुच्यते
गेय धातुरित्यभिधीयते
वाचं गेय च कुरुते
यः स, वाग्गेयकार"

अर्थात जो कलाकार मातु और धातु या साहित्य और स्वर रचना में प्रवीण हो वही वाग्गेयकार कहलाता था। केवल गायकी (संगीत) में कुशल और संगीत शास्त्र में ज्ञान न हो अथवा संगीत शास्त्र में कुशल और संगीत की गायकी अंग में कमजोर व्यक्ति को वाग्गेयकार नहीं कहा जाता था। जो व्यक्ति साहित्य के छन्द, अलंकार तथा विभिन्न भाषाओं का ज्ञान तथा सांगीतिक या गायकी का पूर्ण योग्यता रखता हो, उसी को वाग्गेयकार कहा जा सकता है।